INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS
VOLUME 2, ISSUE.5, MAY 2014
ISSN-2320-2882

ORIGINAL ARTICLE

स्वामी विवेकानन्द युवा पीढ़ी के प्रेरणास्त्रोत

डॉ. मनोज कुमार शर्मा
(मानव चेतना एवं योग विभाग)
अटल बिहारी वाजपेयी, हिन्दी विश्वविद्यालय परिसर, भोपाल।

एक वकील जिनका नाम विश्वनाथदत्त, के एक पुत्र के रूप में १२ जनवरी १८६३ मकर संक्रांति को कोलकाता के एक मोहल्ले में जिसको सिमुलिया कहते हैं, में आपका जन्म हुआ। आप के पहले आपको दो बड़ी बहने थीं। पुत्र प्राप्ति के पश्चात आप अपने पुत्र का नाम वीरेश्वर रखना चाहती थी। लेकिन पिता ने पुत्र का नाम नरेन्द्र रखा। माता अपने पुत्र को शिव की ओर ले जाना चाहती है लेकिन पिता संस्कारिकता की ओर। दुर्गाचरणदत्त जो कि नरेन्द्र के दादा थे। जो चिर-परिचित बालक को देखने आते वह कहते बालक अपने दादा पर गया है इससे उनके पिता का मन उद्वेलित होता है इस बात को लेकर कि उनका पुत्र भी सन्यासी तो नहीं हो जायेगा। रामकृष्ण परमहंस से विवेकानंद जी का पहला मिलन १९८१ में हुआ। लेकिन मिलने के पश्चात आपका मन बार-२ कह रहा था कि पागल सा व्यवहार करने वाला व्यक्ति क्या क्या कमी ईश्वर को देखा होगा मैं इन सब बातों को नहीं मानता। एक दिन अर्धरात्रि को आपके मन में प्रबल वैराग्य जागृत हुआ और अपने नदीं में छलांग लगा दिया तैरते हुये नाव तक पहुँचे। आपको देवेन्द्रनाथ जो कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के अग्रज थे नाव पर बैठाया लेकिन आपने यह प्रश्न पूछा कि क्या कभी आपने ईश्वर को देख है आपने कहा नहीं स्वामी जी रामकृष्ण से प्रभावित होकर सन्यासी जैसा जीवन व्यतीत करने लगे फिर क्या था स्वामी जी का राष्ट्र के युवाओं के लिए सन्देश।

११ सितम्बर १८९३ को विश्व धर्म महापरिषद का आयोजन अमेरिका में हुआ। एक ऐसा युवक जिसकी अपनी कोई पचहान नहीं है ऐसे व्यक्ति को सभा में भाग लेने की अनुमति नहीं है क्योकि आपके पास किसी प्रकार का प्रमाण पत्र नहीं है। लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था आपको बोलने का अवसर मिला जेसे ही बोलने के लिए आप खड़े हुये मुँह से निकला एक वाक्य Sisters and Brothers of America तो लोग कहते है कि यह वाक्य इस सभागार ने बैठे हुये ७००० लोगों के दिलो को छू गया। लगातार ५ से ७ मिनट तक तालियों को गड़गहाहट से समाभार गूँजता रहा इस घटना के

Please cite this Article as : डॉ. मनोज कुमार शर्मा, स्वामी विवेकानन्द युवा पीढ़ी के प्रेरणास्त्रोत:International Journal Of Creative Research Thoughts, Volume 2, Issue.5, May 2014

फलस्वरूप यह बिना पहचान का युवक विश्व विख्यात बन गया और पूरा विश्व आपको विवेकानन्द के नाम से जानने लगा।

धर्मसभा में दुनिया की सभी सभ्यताओं, धर्मो के बीच में भारत की अध्यात्मिकता, संस्कृतियों, सम्पूर्ण विश्व के कल्याण का सामर्थ्य इसकी प्रस्तुती स्वामी जी ने की उसके फलस्वरूप भारत के सामाजिक जीवन का हर कौना स्वामी विवेकानन्द के उस सामर्थ्य से प्रभावित होकर उसमें आत्म विश्वास क संचार हुआ। पाश्चात्य संस्कृति वाले कोई देश स्वामी जी के विचारों एवं उनकी व्याख्याओं से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। प्रा. जान राइट ने स्वामी जी के परिपेक्ष्य में एक बात कहा कि यदि अमेरिका के सारे प्रोफेसर को एक साथ मिला दिया जाय तो उनका ज्ञान इस एक व्यक्ति के सामने कम पड़ेगा। महात्मा गांधी जी ने यह लिखा है कि विवेकानन्द को पढ़ने के बाद मेरे हृदयेश में देश के प्रति जो भक्ति थी वह हजार गुना और ज्यादा हो गई। रविन्द्रनाथ टैगोर ने कहा कि भारत को अगर समझना है तो कुछ और करने की जरूरत नहीं बल्कि विवेकानंद को पढ़ों समग्र भारत, उसकी यात्रा, उसका इतिहास आपकी समझ मे जरूर आ जाएगा। स्वामी जी को विभिन्न विचारकों ने अपने-२ बुद्धि के आधार पर विवेचना की है पंडित जवाहरलाल नेहरू ने यहां तक कहा कि जो व्यक्ति अवसाद से ग्रसित है उसके लिए स्वामी जी टानिक के समान आए।

भगिनी निवेदिता ने कहा स्वामी जी को भारत ह्दय के धड़कता था, भारत उनकी नाड़ियों का स्पंदन था। दिन का स्वप्न भी भारत तथा रात का दु:स्वप्ने भी भारत ही था। भारत उनके रक्त और मज्जा के द्वारा अभिव्यक्त होता था। स्वामी विवेकानन्द भारत की सम्पूर्ण अध्यात्मिकता, बुद्धिमत्ता, शक्ति पवित्रता,भवितव्य और दृष्टि थे। यह भी सर्वविदित है कि स्वामी रामकृष्ण परमहंस से मिलने के बाद उनका सम्पूर्ण परिवर्तन हुआ। सभी प्रकार की सिद्धि प्राप्त करने के बाद यदि वह अध्यात्मिक सुख चाहते तो परमहंस जी के शरीर त्यागने के बाद किसी हिमालयीन गुफा में बैठकर अपना सम्पूर्ण जीवन बीता सकते थे। लेकिन आपने ऐसा नहीं किया आपने पूरे भारत का भ्रमण शुरू किया। इस भ्रमण्काल में वह हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक ४ वर्ष तक घूमते रहें। आपने महलों के साथ-२ दुर्गम स्थल का भी भ्रमण किया तथा हर तरह से देश को समझने की पुरजोर कोशिश किया। स्वामी जी का विश्वास था कि भारत का जीवित्मा और अपनी स्वयं की अध्यात्मिक तकतों के साथ खड़ा होना न केवल भारत

के कल्याण के लिए जरूरी है। अगर विश्व को जीवित रखना है उसमें शांति बनी रहनी है उसके अंदर अगर संवाद और समन्वय स्थापित होना है तो भारत का जीवित रहना उससे भी ज्यादा जरूरी है।

स्वामी जी एक जगह अपने उद्‌बोधन में कहते है कि क्या भारत मर जाएगा। यदि भारत मर गया तो दुनिया के अध्यात्मिकता का विनाश हो जाएगा। सभी प्रकार की नैतिकताओं का अंत हो जाएगा। विभिन्न धर्मो के मध्य आपसी समन्वय और सहानुभूति का अंत हो जाएगा और भोग और विलासिता का साम्राज्य होगा, नर और नारी देवता होंगे और धन पुजारी होगा, विश्वास में धोखा-धड़ी उसकी शक्ति होगी और छल-कपट प्रपंच उसके अनन्य सहभोगी होगें और मानव आत्माओं की बलि दी जाएगी।
जैसा कि आपने सुना होगा कि अमेरिका और यूरोप बहुत ताकतवर थे। यहॉ तक कि इग्लैंड के राज्य में सूर्य डूबता नहीं था उस पूरे यूरोप में चार वर्ष भ्रमण के बाद जब १८९६ में वह इग्लैंड से भारत वापस आने के लिए जहाज पर चढ़ने लगे तो उनका एक अंग्रेज दोस्त था जो कि उसने एक अनुभव किया उसने कहा कि ४ वर्ष कि पश्चिम के अनुभव के बाद आपको आपकी मृात्रभूमि कैसी लगेगी। स्वामी जी ने बड़ी फुर्ती के साथ कहा यूरोप आने से पहले मुझको भारत से प्रेम था लेकिन यहां से वापस जाने के बाद भारत की मिट्‌टी का एक-२ कण मेरे लिए पवित्र है। वहां की हवा, मेरे लिए पवित्र है तथा मेरा भारत मेरे लिये तीर्थस्थल है।

स्वामी का प्रखर संदेश अगर वास्तविक रूप से भारत का उत्थान करना है तो सबसे पहले भारत पर विश्वास होना आवश्यक है उसकी परम्पराओं पर उसकी धरती पर एवं उसकी बाकी चीजों पर। एक एसा विचार कि दुनिया के किसी भी कोने में कुछ भी सीखने के लिए नहीं है ऐसा मानना उचित नहीं होगा। हर देश दूसरे देश को कुछ न कुछ दे सकने में सक्षम है इसलिए आने वाले समय में देश का आगे उत्थान करना है तो पश्चिम के देशों ने जो विकास और तकनीकी के अंदर विकास किया है हमें उन तत्वों को लेना होगा। स्वामी जी के विचार में पश्चिम का जीवन उन्मुक्त अट्‌टाहास है और उसके नीचे बिलखना है और उसका अंत सिसकने में होगा। जहां तक भारत की बात है। ऊपर-२ मायूसी लेकिन अंदर जा कर देखेगें तो आज भी उन्मुक्तता, आनंद और उल्लास का अनुभव करेगें। इस प्रकार स्वामी जी का कहना है कि यदि भारत की अध्यात्मिकता और पश्चिम की विज्ञान एवं तकनीकी इन दोनों के समन्वय से आने वाले समय में एक नये भारत का निर्माण होगा इस दिशा में

स्वामी जी ने जोर दिया है। यदि एक नये भारत का निर्माण करना है तो आने वाली पीढ़ी का मानस परिवर्तन करना बहुत जरूरी होगा तो प्रश्न उठता है कि शिक्षा कैंसी हो। तो इस विषय पर स्वामी जी का कथन कि विदेश शिक्षा से पहले बाहर निकलना चाहिए। स्वामी जी ने कहा था आजादी के बाद भी अपने देश के अंदर वही चल रहा है स्वामजी ने कहा था कि पुस्तकों में पढ़ाया जाता था उनके जमाने में तो बच्चा यही पढ़ता था कि तुम्हारा पिता मूर्ख था तुम्हारा दादा महामूर्ख था और तुम्हारे सारे आचार्य पाखंडी थे और जब व्यक्ति कॉलेज की पढ़ाई पूरी कर बाहर आता है तो निषेध और निंदा की खान बन जाता है। हिन्दू शब्द आज दुनिया भर के अंदर निंदा का पात्र है, तो हमें अपने पुरूषार्थ से इस अधिक प्रकार का जीवन खड़ा करना है कि दुनिया के लोग यह कहरने के लिए बाह्य जो जाए कि ''हिन्दू'' उस शब्द से पवित्र शब्द दुनिया की किसी भी शब्दकोश में नहीं है आपका कहना था कि कोई व्यक्ति यदि नदी के प्रवाह को पूरा उलट दे, मोड़ दे। तो विकास की जगह विनास होगा। उस नदी का आस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा वैसे ही सामाजिक जीवन का प्रवाह नये लेने के चक्कर में अपना पुराना सब कुछ छोड़ दे तो उसका अर्थ विकास नहीं विनास के अन्दर होगा। इसलिए स्वामी जी कहते है कि पहले हमें अपने आप को समझना है अपनी अध्यात्मिकता और परम्परा को समझना है अपनी विरासत को समझना उसके प्रति स्वामिमान करना फिर सारी दुनिया के अंदर जो कुछ है उसको लेना। विकास के संबंध में विकास यानी आगे जाना। आगे जाना यह क्या है हम धरती के ऊपर चलते है जब पैदल चलते है तो एक पैर जमीन के उपर रहता है तथा एक पैर जमीन पर टिका रहता है अब उपर जो पैर है वह जमीन पे टिकता है तब दूसरे पैर को उठा के आगे बढ़ाते है इस प्रकार विकास होता है। हा हमारी जो कुरीतिया है और जो कमियां है उनको दूर रखना, उन्होंने पश्चिमी देशों की धरती पर रहते हुये कभी अपने देश की निन्दा नहीं की। अपितु निंदा करने वाले लोगों के प्रश्नों का उत्तर उन्हीं की धरती पर रहते हुये दिया। इसाई मिशनरी भारत के विरूद्व उल्टा सीधा प्रचार करते है अमेरिका में रहते समय स्वामी ने एक बार कहा कि बहुत अच्छा बिस्तर है मुलायम है लेकिन नीद नहीं आ रही है वे रो रहे है किसी ने पूछा क्या बात है बोले, इस विस्तर पर सोते समय मुझे ऐसा लगा कि कितनी समृद्धि है तो मेरे देश के अन्दर लोगों की क्या स्थिति है। गरीबों की क्या स्थिति है व वह किस ढंग से रहते है उनका स्मरण करके मुझ को रोना आ रहा है एक समय की बात है स्वामी जी के विदेश से

भारत आने के बाद जब बेलूर मठ का निर्माण हुआ, तथा रामकृष्ण मिशन बना। बंगाल के प्रख्यात नाटककार गिरिशचन्द्र घोष एक बार शिष्यों को पढ़ा रहे थे तभी विवेकानन्द जी एक व्याख्या कर रहे थे। गिरीश चन्द्र जी ने थोड़ी देर तक सुना, फिर आपने कहा कि नरेन (अभिप्राय प्रेम से नरेन सम्बोधित करते है क्योंकि वह अपा से बहुत बड़े थे।) अपने कलकत्ता के एक मोहल्ले के अन्दर एक परिवार है उसको तीन दिन से रोटी नहीं मिली। तथा जो दूसरा मोहल्ला है वहाँ एक विधवा है आज उसके घर का चलना मुश्किल है इस प्रकार से ४ से ६ घंटों के दु:ख दर्दो की विवेचना कि इसके बाद बोले तेरे वेद वेदांत में इसका कोई इलाज रखा है क्या इतना सुनते ही स्वामी जी भावुक होकर चल दिये और उनके नेत्रों से धड़-२ ऑसू बहने लगे। तब गिरीशघोष जी ने शिष्यों से कहा कि मैं तुम्हारे गुरूजी का सम्मान इसलिए नहीं करता क्योंकि वह एक विद्धान है बल्कि उसका सम्मान इसलिए करता हूं कि उसके पास एक संवेदनशील हृदय है। एक स्थान पर आपने कुछ इस प्रकार अपने उद्‌गार व्यक्त किया जब तक करोड़ो की आबादी वाला यह देश के नागरिक अशिक्षित और भूखे रहेगें तब तक में उस आदमी को विश्वास घातक समझुगॉ क्योंकि जो उनके खर्च से शिक्षित तो हुआ है लेकिन जो उन पर नाम मात्र भी ध्यान नहीं देता।

इस सामाजिक संवेदना के साथ-२ लोगों में अपनी संस्कृति, सम्पूर्ण इतिहास और अपनी परम्परा को जानने वाले इतिहास की दृष्टि होनी चाहिए। भारतीय समाज जीवन की अमरता का रहस्य हजारों किताबों से ज्यादा सोमनाथ जैसे मन्दिर समझा सकते हैं क्योंकि सोमनाथ का मंदिर आज का नहीं है इस मंदिर को कितनी बार आक्रमणकारियों ने घूलिसात किया लेकिन हर बार अपने बल पर उठकर वैभव के साथ खड़ा हुआ। दुनिया की कई रियासतें नष्ट हुई तो कूड़ेदान में चली गई लेकिन भारत की बात करे तो बार-बार मरकर भी अमर हुआ। यही तो भारतीय जीवन की विशेषता है आपका ही एक और वक्तव्य जब ग्रीस का अस्तित्व इतिहास के दृष्टि के बारे में नहीं था रोम अपने भविष्य के गर्भ में छिपा हुआ था भारत तब भी पूरी तरह से सक्रिय था। इसी प्रकार शिकागों भाषण में आपने कहा था कि में करोड़ो हिन्दुओं की ओर से आपका अभिनन्दन करता हूॅ तथा सभी धर्मो की माता की ओर से आपका हार्दिक अभिनन्दन करता हूॅ मेरा आगमन उस जगहों से हुआ है जिसने जेरूशलम में रोमन लोगों कि अत्याचारों से उनका मंदिर धूल में मिला दिया गया उस समय यहूदियों को शरण दिया।

इस प्रकार जब ईरान से प्रताड़ित होकर निष्काषित लोग यहॉ आये तो उनको शरण देने वाला यही देश था क्यो? ये जो पूरा अध्यात्मिक चिंतन है जो सबको एक मानता है उसी वजह से हमने सबको शरण दिया और इस प्रकार की विशेषता केवल भारत में है इसी प्रकार उन्होंने कहा कि ये जो हमारी अध्यात्मिकता है उसे हमे चारों ओर से अधिक विस्तारित करना पड़ेगा। और आगे आने वाले समय के अंदर यह करना है तो उपाय क्या है तो आपने कहा कि एक संगठन खड़ा करना पड़ेगा। एक जगह आपने यह भी कहा कि बुराई की समस्त ताकतों के विरूद्व हमें अच्छाई की सभी ताकतों को संगठित करना होगा एवं मिल जुलकर कार्य करना होगा तथा ईष्या और द्वेष से दूर रहना होगा इसी से आने वाले समय के अंदर एक भारत का निर्माण होगा। स्वामी जी कहते है कि मुझे आशा नवयुवकों से है क्योंकि मेरी आशाओं का केन्द्र युवा है। मैं इस दुनिया में हूँ या ना रहूँ लेकिन मेरी वाणी रहेगी। स्वामजी के शब्द थे कि बोलो "अज्ञानी भारतवासी, ब्राम्हण भारतवासी दरिद्र भारतवासी चांडाल भारतवासी मेरे भाई है। तुम भी शरीर से चिथड़े को लपेट कर उच्च स्तर से घोषणा करों कि भारतवासी मेरे भाई है भारतवासी मेरे प्राण है। मेरे ईश्वर भारत के देवी-देवता है। भारतीय समाज मेरे बचपन झूला, जवानी की फुलवारी और बुढ़ापे के काशी है भारत की मिट्टी मेरे लिए स्वर्ग है तथा दिन और रात में यह प्रार्थना करों कि हे भोलेनाथ, हे जगदम्बे मुझे मनुष्यत्व दो, मेरी का पुरूषता मेरी कार्यरता को दूर करो और मुझे मनुष्य बनाओं। स्वामी जी का यह उद्बोधन कि १०० लोग मुझे मिल जाए जो मानवता के प्रति प्रेम से समर्पित अपनी सारी जिंदगी लगाने को तैयार हो।

भारत के आमजनों की इतिहास की स्मरण शक्ति इतनी है कि हजारों वर्षो पुरानी कहानियाँ भी वो ऐसे सुनते-सुनाते है जैसे वह सब आज ही घटित हुआ हो। भारत के जीवन के तहय जीवन के मूल्य गौरव की बातें आम व्यक्ति जिसकों अनपढ़ कहा जाता है उसके भी स्मरण में है। भारत का विचार सृष्टि के समभाव मतलब सभी को समान दृष्टि से देखना चाहिए यही संस्कृति हमें समन्वय सिखाती है तभी पूरा भारत एक साथ रहता है यही सम्यक दृष्टि हमारी एकता का आधार है हमारे देश की पहचान उन सवा करोड़ लोगों से है जो अपने निजी जीवन में किसी के बहकावे या लालच में नहीं आते अपार कष्ट में रहते है फिर भी अपने पूर्वजों के उस धर्म को स्वाभिमान को मूल्यों को एवं परम्पराओं को नहीं छोड़ते है। नहीं तो भारत कब का गर्त में समाहित हो गया होता। इसी परिप्रेक्ष्य के गांधी जी ने

कहा था कि भारत तलवारों के द्वारा नहीं बचा बल्कि भारत अपने आत्मबल के द्वारा बचा हुआ है। इसे हमारा दुर्भाय नहीं तो और क्या कहेगें कि हमारी जो पढ़ी लिखी पीढ़ी है जो अधिकार सम्पन्न है वह स्वयं ही हमारे भारत से परिचित नहीं है। सर्वप्रथम तो उन्हें हमारे भारत से परिचित होना होगा इसके लिए धर्म से संस्कृति में एवं जीवन मूल्यों से जुड़ना होगा। कुरीतियों का जो आवाम ढका हुआ है हमें अपने ऊपर से हटाना होगा। तभी सही भारत का परिचय समाज को विश्व को मिलेगा। हमारी नदियॉ, पर्वत, इतिहास ऋषि महापुरूष, तीर्थ आदि ये सभी हमारी पहचान है ये हमारे भारत के परिचय को प्रतीकात्मक रूप से दर्शाति है। इसलिए हमें इन सभी चीजों पर गर्व हैं। भारत को पहिचान से परिचय से अलग नहीं किया जा सकता है अत: हमारे देश का परिचय किन चीजों से है इसकी स्ष्टटता का होना परम आवश्यक है। आपने भारत की तुलना विश्वदीप से किया है क्योंकि दूनिया को उजाला देने का काम इसका है अगर यह दीपक जलता रहा तो अज्ञानतावश जो बातें होती हैं उसका अंधकार मिटता रहेगा। एक एसा भी तर्क दिया जाता रहा है अस्पृश्य जाति में जन्म लेना व्यक्ति के पूर्व जन्म का प्रतिफल है। यहाँ तक कि अपने पूर्नजन्म के कर्मफल के आधार पर मनुष्य ऊँची या नीची जाति में जन्म लेता है। इस तरह के सवाल स्वामी जी से बार-बार पूँछें जाते रहे है। स्वामी जी के विचार कुछ इस प्रकार से कि मनुष्य की स्वतंत्रता की एक चिर प्रतिज्ञा कर्म है यदि हम अपने कर्म के द्वारा स्वयं को नीचे गिरा सकते है तो हमारी क्षमता के यह शामिल होना चाहिये कि हम अपने कर्म के द्वारा अपने आप को ऊपर उठाये। यदि पूर्वजन्म में हमारे कर्म में कुछ कभी रह गई हो तो उसे इस जन्म में उस कमी को पूरा करने का अधिकार और अवसर मिलने चाहिए।

सर्वण समाज की भ्रांतियों और आंशंकाओं का निराकरण करते हुये स्वामी जी कहते है। भारत वर्ष में कृषि कार्य करने वाले कृषक मेहतर, चर्मकार तथा ऐसे ही निम्न जातियों वालों मेंकार्य करने की शक्ति और उनका आत्मविश्वास आप सबकी अपेक्षा अधिक है। आज आवश्यकता है तो इस बात की उन्हें उनका खोया हुआ सामाजिक व्यक्तित्व पुन: लौटा दिया जाए। जब तक वे उठेंगे नहीं भारत माता जागेगी नहीं। स्वामी जी की एक चेतावनी थी कि ऊँची जाति के लोग नीची जाति वालो को दबा नहीं सकेगें चाहे वह इसके लिए कितना ही प्रयास क्यों न कर ले। ऊँची जातियों का भला इस बात पर है कि निम्न जातियों को उनके यथोचित अधिकार प्राप्त करने में मदद करें। जब सभी अंग समान रूप से

कार्य करेगें तभी देश अथवा समाज को ऊपर उठते देखा जा सकता है। इस देश में निवास करने वाले निम्न जाति और गरीबों के प्रति जो हमारे भाव है उनके प्रति सोचने पर हमारे अत:करण में पीड़ा होती है उन्हें कोई अवसर प्राप्त नहीं होता जिससे बचकर वह निकल जाए तथा ऊपर चढ़ने का भी कोई मार्ग नहीं मिलता। वे दिन-प्रतिदिन और ज्यादा गहराई के डूबते जा रहे है। निर्दयी समाज के द्वारा होने वाले आघातों को सहते है लेकिन वह इससे वाकिफ नहीं होते कि अघात कहॉ से हो रहे है। वेभी अन्य मनुष्यों की तरह मनुष्य है इस बात को भूल गये है और इसका परिणाम हमें दासत्व या गुलामी के रूप में प्राप्त हुआ। स्वामी जी कहते है कि ईश्वर की कृपा से मैंने रहस्य का पता लगा लिया है। दोष धर्म का नहीं इसके विपरीत धर्म तो यही सिखता है कि प्रत्येक प्राणी मात्र स्वयं तुम्हारी आत्मा का है। विभिन्न रूपों में विकास है पर यदि दोष है तो यह सहानुभूति का अभाव व्यवहारिक आचरण का अभाव, हृदय का अभाव। इस वस्तुस्थिति को दूर कना है धर्म को नष्ट करके नहीं अपितु हिन्दू धर्म के महान उपदेशों के अनुसार आचरण करके जो कि हिन्दू धर्म का तर्क संगत रूप हैं उसकी अद्भुत सहानुभूति को उस आचरण के साथ युक्त करके। सच्चे धर्म की अंतिम कसौटी यह है कि वह सत्य को भलीभांति पहचानता हो और मनुष्यों से मैत्री करना सिखाता हो। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए हमारे अंदर घृणा के परित्याग का होना आवश्यक है जो कि शुभमाब से कही ऊपर की चीज है। भारत के संबंध में विभिन्न विचार धारा के लोग कई प्रकार की बातें कहते है कोई कहता है कि भारत हॉलिवुड है या वॉलीवुड कुछ कहते है प्ज शहर बैंगलोर है कुछ लोग भारत की पहचान Gate way of India या India gate को बचाते है। ओर कई एसे ैलउइवस है जिनको भारत की पहचान के रूप में बोध थोपा जा रहा है। यह सारी स्थितियॉ भ्रामक एवं मिथ्या है।

वास्तविक रूप से भारत की पहचान उसकी संस्कृति में धर्म के मूल्यों में है। लगातार भार तो देखने लोग वर्षो से आए और रहकर यही सीखा। इसी प्रकार जागरण काल जितना भी है अर्थात स्वामी विवेकानन्द एवं रवीन्द्रनाथ टैगौर उसमें जितने लोग हुय सबने एक ही बात लिखी कि वास्तव में भारत की अगर कोई पहचान है तो वह उसके धर्म संस्कृति एवं जीवन मूल्यों के हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१	*शिक्षा (स्वामी विवेकानन्द)*	*:*	*श्रीराम कृष्ण शिवानन्द स्मृति ग्रन्थ माला, पुष्प २६ रामकृष्ण मठ, नागपुर*
२.	*इच्छा शक्ति और उसका विकास*	*:*	*स्वामी बुधानन्द आदृेत्य आश्रम पॉच कोलकत्ता ७०००१४*
३.	*युग नायक विवेकानन्द स्वामी*	*:*	*स्वामी गम्भीरान्द रामकृष्ण नागपुर २०११, मालापुष्प ६४ रामकृष्ण नागपुर मठ २०११*
४.	*प्रेम योग स्वामी विवेकानन्द*		*मालापुष्प ६४ रामकृष्ण नागपुर मठ २०११*
५.	*अग्निमंत्र*	*:*	*मालापुष्प ६४ रामकृष्ण नागपुर मठ २०११*
६.	*जाति, संस्कृति और समाजवाद स्वामी विवेकानन्द*	*:*	*मालापुष्प ४३ रामकृष्ण नागपुर मठ २०११*
७.	*महापुरूषों की जीवन गाथाऐं स्वामी विवेकानन्द*	*:*	*रामकृष्ण मठ नागपुर २०११*
८.	*भारत और उसकी समस्याऐं संकलन*	*:*	*स्वामी विवेकानन्द २००८ रामकृष्ण मठ नागपुर*
९.	*विद्यार्थी मित्र स्मारिका सितम्बर २०१३*	*:*	*मेरे सपनों का भारत कार्यालय छात्र शक्ति भवन, भारत माता चौराहा, डिपो चौक भदभदा चौक, भोपाल।*